RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 76, अंक : 9 एक प्रति 2 : रुपये
कुल पृष्ठ : 8
रविवार 2 जून, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076, सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-76, अंक : 9, 30-2 जून 2019 तदनुसार 19 ज्येष्ठ, सम्वत् 2076 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

उत्तम मननशील (मनुष्य)

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

स यो न मुहे न मिथू जनो भूत्सुमन्तुनामा चुमुरिं धुनिं च।
वृणक्पिप्रुं शम्बरं शुष्णमिन्द्रः पुरां च्यौत्नाय शयथाय नू चित्।।

-ऋ० ६।२८।८

शब्दार्थ-यः = जो **जनः** = मनुष्य **न मुहे** = मोह में नहीं पड़ता और **न** = न ही **मिथू** = मिथ्यावादी **भूत्** = होता है, जो **इन्द्रः** = पापनाशक मनुष्य **चुमुरिम्** = प्रजा को खानेवाले **च** = और **धुनिम्** = प्रजा को कम्पानेवाले, **पिप्रुम्** = अपना पेट भरने वाले **शम्बरम्** =प्रजासुख को रोकने वाले **शुष्णम्**=प्रजाशोषक को **पुराम्** = पुरों को **च्यौत्नाय** = प्राप्त करने तथा **शयथाय** = सुलाने के लिए **नू+चित्** = भी- **वृणक्** = नष्ट कर देता है, **सः** = वह **सुमन्तुनामा** = सुमन्तु =उत्तम मननशील मनुष्य नामवाला है।

व्याख्या-इस मन्त्र में मनुष्य के 'सुमन्तु'= उत्तम मननशील नाम का प्रयोग किया है। शास्त्रों में मनुष्य का लक्ष्य लिखा है-'**मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति**'=जो मनन करके कार्य करे। मनुष्य, सुमन्तु, मनु, पर्यायवाची शब्द हैं। जो मननशील है, जिसका स्वभाव विचारपूर्वक कर्म करने का है, वह प्रायः मोह में नहीं पड़ता। उसे मोह उन्मादक, बुद्धिनाशक भासता है, अतः वह सदा सावधान रहता है। मनुष्य को मिथ्या भी नहीं बोलना चाहिए। इस सबसे बढ़कर उसका कर्त्तव्य है कि वह अन्याय और अत्याचार का विरोध करे। कदाचित् इसी मन्त्र का भाव हृदय में रखकर महर्षि ने लिखा है-

"मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने सर्वसामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्त्ती, सनाथ, महाबलवान, और गुणवान् भी हो, तथापि उनका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे, अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जाएँ, परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।"

इसी भाव से भर्तृहरिजी ने कहा है-

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

नीतिनिपुण लोग चाहे निन्दा करें या स्तुति, सम्पत्ति आये चाहे जाए, आज ही मृत्यु आ जाए और चाहे युगयुग जीवन रहे, किन्तु धीर मनुष्य न्याययुक्त मार्ग से पग नहीं हटाते।

न्याययुक्त मार्ग कहो, धर्म कहो, एक ही बात है-'**न जातु कामान्न भयान्न लोभाद् धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः**' (महाभारत)-कामना के वश होकर, लोभ से अभिभूत होकर, जीवन के निमित्त भी कभी धर्म का त्याग न करे। व्यासजी ने भी वही बात कही। स्पष्ट है, सौ सियाने एक मत।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।।

-यजु० ३१.८

भावार्थ-उस जगद् रचयिता परमात्मा ने अपनी शक्ति से घोड़े, गधे, ऊँट आदि नीचे ऊपर दोनों ओर दांतोंवाले पशु उत्पन्न किये, एक ओर दांतोंवाले बैल, भैंस आदि प्राणी उत्पन्न किये। उसी प्रभु ने बकरी भेड़ आदि प्राणी उत्पन्न किये हैं। इस वेदमन्त्र में जो घोड़ा, गाय, बकरी और भेड़ इतने थोड़े, प्राणियों का वर्णन है, वह संसार के लाखों प्राणियों का उपलक्षण है, अर्थात, वह सर्वशक्तिमान् जगन्नियन्ता प्रभु, अपनी अचिन्त्य शक्ति से लाखों प्रकार के प्राणियों के शरीरों को सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न और प्रलय काल में सबका संहार भी करता है।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।।

-यजु० ३१.९

भावार्थ-विद्वान मनुष्यों को, चराचर संसार के कर्ता-धर्ता जगदीश्वर का, शम, दम, विवेक, वैराग्य, धारणा, ध्यान आदि साधनों से पवित्र हृदय रूप मन्दिर में, सदा पूजन करना चाहिए। बाहिर के पूजने के ढंग, जो बहिर्मुखता के कारण हैं, उनसे सदा विद्वान पुरुषों को आप बचकर, अज्ञानी पुरुषों को बचाना चाहिए। जो विद्वान् कहलाकर आप बाहिर के पाखण्ड और दम्भ में फँसे और दूसरों को उन्हीं में फँसाते हैं, वे विद्वान् ही नहीं महामूर्ख और स्वार्थी हैं। ऐसे दम्भी, कपटी पुरुषों से परे रहने में ही कल्याण है।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते

-यजु० ३१.१०

भावार्थ-इस जगत में ईश्वर का सामर्थ्य असंख्य है, उस समुदाय के उत्तम अंग मुख अर्थात् मुख्य गुणों से इस संसार में क्या उत्पन्न हुआ है? बाहूबल, वीर्य्य, शूरता और युद्ध-विद्या आदि गुणों से कौन पदार्थ उत्पन्न हुआ है? व्यापार, कृषि आदि मध्यम गुणों से किसकी उत्पत्ति हुई है? मूर्खता आदि नीच गुणों से किसी उत्पत्ति हुई है? इन चार प्रश्नों के उत्तर आगे के मन्त्र में दिए हैं।

शरीर रक्षा के साधन और वेद

-आचार्य मुन्शीराम शर्मा 'सोम'

भूमि और उसकी उपज-

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा, अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः।

दीर्घ न आयुः प्रतिबुद्ध-यमानाः, वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।।

भूमि माता! तुम्हारी गोद बड़ी सुखद है, तुम्हारे वक्षः स्थल से जो अन्न, फल आदि की धारायें उत्पन्न होती हैं वे हमारे लिये नीरोगता देने वाली हों और यक्ष्मा जैसी बीमारियों को उत्पन्न न करें। हमारी आयु तुम्हारी इसी प्रकार की उपज का सेवन करके बढ़ती है, दीर्घ होती है। यह समझ कर हम तुम्हारे उपकारों का बदला चुकाने में अपने को बलिदान भी कर दें, ऐसा सामर्थ्य हमें प्रदान करो।

'माता भूमिः पुत्रो अहम् पृथिव्याः' पृथ्वी! तू मेरी माता है और मैं तेरा पुत्र हूँ। तू मेरे लिये शरीरोपयोगी दीर्घायु-वर्धक अन्न-धन दे, जैसे बिना बिचकी हुई गौ दूध की सहस्रों धाराओं द्वारा अपने बछड़ों का तथा मानवों का पोषण करती रहती है। इन मन्त्रों में भूमि की उपज को शरीर-रक्षा के लिये उपयोगी बताया गया है।

औषधि-

या औषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।

मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च।।

(ऋ० १०.१७,१)

शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः।

अध शत ऋत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत।।

देवों के उत्पन्न होने से तीन युग पहले प्राथमिक ओषधियां उत्पन्न हुई थीं। ये अनेक प्रकार के रूपों वाली थीं और इनके १०७ धाम थे। सौ धामों वाली ये ओषधियां सहस्रों रूपों में उगती थीं और ये सैकड़ों रोगों का शमन करने वाली थीं। ये ओषधियां फूलों से लदी हुई और अनेक प्रकार के फल उत्पन्न करने वाली थीं। इन में अश्वों के समान रोगों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति थीं। ये वीरुध या वनस्पतियां प्राणियों को पाप रोगों से पार करने वाली थीं। ये ओषधियां मुझे भी रोग रहित कर दें।

यत्रौषधीः समग्मत राजानः समिताविव। विप्रः स उच्यते भिषग्रक्षोहामीवचातनः।।

ऋषियों ने इन ओषधियों की परख की थी। एक-एक ओषधि का जो गुण और स्वभाव सुश्रुत, चरक, वाग्भट्ट, माधव निदान, शार्ङ्गधर आदि में वर्णित है, वह ऋषियों की दीर्घ तपस्या का फल है। वेद ओषधियों के ज्ञाता ऐसे ही विप्र को भिषक् संज्ञा देता है और कहता है कि वह भिषक् रोग को ही दूर नहीं करता, हमारे अन्दर बैठे पाप-राक्षस को भी समाप्त करने वाला है।

जल-

ओमानमापो मानुषीरमृक्तं धात तोकाय तनयाय शं योः।

यूयं हिष्ठा भिषजो मातृतमा विश्वस्य स्थातुर जगतो जनित्रीः।।

(ऋ० ६,५०,७)

जैसे पृथ्वी और उसकी मिट्टी स्वास्थ्य के लिये लाभकारी है और अनेक चर्म रोगों को दूर करती है, वैसे ही जल भी चिकित्सा का प्रमुख साधन है। मंत्र में जलों को मनुष्यों का रक्षक कहा गया है। शान्त अवस्था में तो जल का उपयोग होता ही है, अशान्त और आकुल अवस्था में जल के विशेष प्रयोग होते हैं। मोतीढला, चेचक तथा विषम ज्वर में अन्य किसी ओषधि का उपयोग न करें, केवल उष्ण जल पर ही अवलम्बित रहें, तो व्याधि अपने आप शान्त हो जाती है। वेद जलों को सर्वश्रेष्ठ वैद्यमाता का नाम देता है। जल न केवल ओषधि है, प्रत्युत वह जड़ और जंगम दोनों की जननी भी है। ये जल हमारे पुत्रों और पौत्रों को शान्ति दें।

अग्नि-

वेद कहता है 'अग्निर्हिमस्य भेषजम्' अग्नि ठंडक की ओषधि है। भारत में यज्ञसंबन्धी अनुष्ठान अग्नि के ही उपचारात्मक प्रयोग थे। पश्चिमी चिकित्सा विज्ञान जो विद्युत तरंगों से रोग निदान का कार्य कर रहा है, उसे भी अग्नि उपचार का ही नाम दिया जायेगा। सूर्य-चिकित्सा भी प्राचीन भारत की भांति पश्चिम जगत् में प्रमुखता पा रही है और सूर्य किरणों के विशिष्ट आधान या आक्षेपण द्वारा रोगों को शमन किया जा रहा है। वेद कहता है-'तवेमे पृथिवि पंच मानवाः येभ्यो ज्योतिः अमृतं मर्त्येभ्यः उद्यन्त् सूर्यो रश्मिभिरातनोति।' जब सूर्य उदय होता है तो अपनी किरणों में भरे हुये अमृत को भी विश्व भर में फैला देता है। सूर्य की ज्योति अन्धकार में पनपने वाले कीटाणुओं को नष्ट कर देती है, ठंडक को भगाती है और उष्णता का संचार करके प्राणियों को प्राणवान् बना देती है। प्रश्नोपनिषद् में 'प्राणः प्रजानां उदयति एष सूर्यः' सूर्य को प्रजामात्र का प्राण कहा गया है।

वायु-

पृथ्वी, जल, अग्नि, विद्युत और सूर्य की भांति वायु भी उत्तम ओषधी है। वेद कहता है-

द्वौ इमौ वातौ वातः आ सिन्धोः आ परावतः।

दक्षं ते अन्य आवातु परान्योवातु यद्रपः।।

आ वात वाहि भेषजं विवातवाहि यद्रपः।

त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईसये।।

आवात वातु भेषजं शम्भुमयो भुवो हृदे।

प्रण आयूंषितारिषत्।।

वायु के कार्य दो प्रकार के हैं। प्रातः कालीन मन्द-मन्द वायु में विचरण कीजिये तो वह आपके अन्दर नवीन प्राणों का संचार कर देगी और प्रभंजन के रूप को सामने लाइये, तो वह न जाने कितने कूड़े-कर्कट को अपने साथ उड़ा ले जाता है। शरीर में प्राण और अपान के रूप में वायु के यही दो कार्य सम्पन्न होते हैं। बाहर के अन्तरिक्ष-समुद्र में जो प्राण-शक्ति भरी पड़ी है, उस में डुबकी लगा कर हमारी श्वास शरीर के भीतर प्राणामृत का संचार करती रहती है और भीतर जो मल-संचित होता रहता है उसे लेकर प्रश्वास बाहर फेंकती रहती है। प्राण और अपान के रूप में वायु इस प्रकार हमारे स्वास्थ्य का सम्पादन करने में अद्भुत सहायक बनी हुई है। प्राण और अपान दोनों को शरीर-रूपी मंदिर का द्वारपाल भी कहा गया है, जो कभी नहीं सोते, निरन्तर जागते हुये ये शरीर की रक्षा किया करते हैं। प्रमाद से पृथक् एवं सतत सावधान ये जागरूक प्रहरी जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त हमारे साथ रहते हैं, हमारा पोषण करते हैं, हमारी रक्षा करते हैं और अन्त में इन्हीं को वाहन बना कर हम परलोक की यात्रा करते हैं। प्राणवायु के ये रूप हमारे शारीरिक रोगों के शमन के लिये वैद्य के रूप में हमारे साथ ही रहते हैं और हमें रोगों से बचाते रहते हैं। वेद-मन्त्र वायु को शरीर में भेषज को प्रविष्ट करने वाली और मल को निकालने वाली कहता है, अतः यह सुख और शान्ति दोनों का संचार करने वाली है। जब तक मल या विजातीय द्रव्य शरीर के भीतर विद्यमान हैं, तब तक अशान्ति और बेचैनी बनी रहती है। उनके निकल जाने पर ही हम शान्ति का अनुभव करते हैं। सुख इसके बाद आता है, जब हम स्वस्थ होने का अनुभव करने लगते हैं। ये दोनों दशायें शंभु और मयोभु दो शब्दों द्वारा अभिव्यक्त हो रही हैं।

यज्ञ-

वायुमंडल के प्रदूषण को दूर करने के लिये यज्ञ एक अनुपम साधन है। यजनमय जीवन के लिये ब्रह्मचर्य और तप अतीव सहायक हैं। वेद में इन तीनों का महत्त्व दृष्टिगोचर होता है। शरीर-रक्षा इन सब के द्वारा साधी जा सकती है। ऋषियों ने यज्ञ, तप और ब्रह्मचर्य के द्वारा दीर्घ जीवन प्राप्त किया था। 'आयुष्मन्तः सुमेधसः' उनकी आयु भी लम्बी थी और बुद्धि भी पवित्र थी। मर्त्य से वे अमर्त्य बन गये थे। यज्ञ के अन्तर्गत भक्ति-भावना का भी समावेश है। यदि हमें शरीर की रक्षा करनी है और उसके द्वारा मोक्ष प्राप्त करना है तो भोगों को भोगते हुये हमें ऊपर लिखे साधनों का अवलम्बन लेना ही पड़ेगा।

सम्पादकीय

युवा पीढ़ी के निर्माण के लिए चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन करें

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से विशेष निवेदन है कि युवाओं के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के लिए एवं उनके अन्दर नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए ग्रीष्मावकाश में अपनी-अपनी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं में चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन करें। युवा पीढ़ी ही राष्ट्र एवं समाज का भविष्य है। सामाजिक उन्नति के लिए युवाओं का चरित्रवान एवं राष्ट्रभक्त होना आवश्यक है। जिस राष्ट्र की युवा पीढ़ी चरित्रवान एवं राष्ट्रभक्त होती है वह राष्ट्र सदैव उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है। चरित्र के विकास के लिए इच्छा शक्ति का होना बहुत आवश्यक है। जिसमें इच्छा शक्ति का अभाव होता है, वह व्यक्ति उन्नति नहीं कर सकता। जो अपने संकल्पों पर दृढ़ नहीं रह सकता, जिसका अपना कोई स्थाई सिद्धान्त नहीं होता, जो अपनी बुद्धि का सदुपयोग नहीं करता, उस व्यक्ति में इच्छा शक्ति का अभाव होता है। ऐसे मनुष्य किसी भी बड़े कार्य को करने में अक्षम होते हैं। ऐसे व्यक्ति किसी का भला नहीं कर सकते। ऐसे व्यक्तियों से अपना भला नहीं होता तो वे समाज का क्या भला कर सकते हैं। एक चरित्रवान व्यक्ति के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति का होना आवश्यक है। बालकों को अपना निर्माण करने का अवसर देना चाहिए। जो लोग उन्हें अपना आत्मनिर्माण करने का मौका नहीं देते, कठिनाईयों को सहन करने का अवसर नहीं देते, ऐसे लोग उनके चरित्र विकास तथा उन्नति में सबसे बड़े बाधक बनते हैं।

राष्ट्र की उन्नति के लिए नैतिक मूल्यों से युक्त चरित्रवान युवा पीढ़ी का होना अति आवश्यक है। युवा पीढ़ी किसी भी राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति होती है। जो इस युवा पीढ़ी को बर्बाद कर देता है, नशे की दलदल में ढकेल देता है, वह राष्ट्र कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। वर्तमान समय में युवा पीढी को नशे से बचाने की सबसे बड़ी आवश्यकता है। आज की युवा पीढ़ी को उसके कर्त्तव्य का बोध कराने वाला कोई नहीं है। स्कूल में भी इस प्रकार की शिक्षा नहीं मिल रही है जिससे विद्यार्थी के अन्दर अच्छे गुण विकसित हो, उसके अन्दर नैतिक मूल्यों की वृद्धि हो। आज की युवा पीढी को चरित्रवान बनाने के लिए माता-पिता और अध्यापकों को अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। किसी भी बालक के जीवन निर्माण में उसके माता-पिता और अध्यापकों की प्रमुख भूमिका रहती है। जो इस भूमिका को निभाते हैं, अपने कर्त्तव्य का वहन करते हैं, वे राष्ट्र की उन्नति और तरक्की में अपना योगदान देते हैं। इसलिए माता पिता और अध्यापकों का कर्त्तव्य है कि वे अपने-अपने कर्त्तव्यों को निभाते हुए बालक और बालिकाओं में ऐसी इच्छा शक्ति उत्पन्न करें, ऐसा आत्मविश्वास जागृत करें जिससे वे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपने पथ से विचलित न हो सके। आत्मविश्वास से युक्त बालक असम्भव से असम्भव कार्य को करने की क्षमता रखता है।

जीवन में कई अवसर आते हैं जब हमारे सामने निर्णय लेना कठिन हो जाता है। अनिश्चय की स्थिति में मनुष्य की समझ में कुछ नहीं आता। मनुष्य सोचता है, विचारता है, सभी प्रकार की युक्तियों का सहारा लेता है और तब अन्तर्द्वन्द के पश्चात किसी एक निर्णय पर पहुंचता है। यह निर्णय हमारी इच्छा शक्ति करती है। युद्ध के लिए तैयार अर्जुन के सामने एक समय ऐसा ही संकट उत्पन्न हुआ था। उसके सम्मुख प्रश्न था कि वह धर्म युद्ध करके अपने आत्मीय जनों की हत्या करे या आत्मीयता के मोह में पड़कर अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाए। सोचा समझा, योगेश्वर श्री कृष्ण के उपदेश को सुना और अन्त में निश्चय किया कि मैं युद्ध में भाग लेकर अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करूंगा।

अच्छे चरित्र के निर्माण के लिए इच्छा शक्ति का होना अति आवश्यक है। जो व्यक्ति दृढ़ निश्चय नहीं कर पाता, जो अपने किसी कार्य को तन्मयता के साथ नहीं करता, उसका व्यक्तित्व प्रभावहीन होता है तथा चरित्र दुर्बल होता है। दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा मनुष्य अपने जीवन में परिवर्तन ला सकता है। जिस व्यक्ति को नशे का सेवन करने या किसी प्रकार के दुर्व्यसन की आदत पड़ गई हैं, ऐसे मनुष्य भी दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा इस आदत से छुटकारा पा सकते हैं। मनुष्य अगर अपनी इच्छा शक्ति को दृढ़ बना ले और संकल्प धारण कर ले तो असम्भव कार्य को भी सम्भव बना लेता है। नीतिकारों का कहना है कि मनुष्य के सभी कार्य दृढ़ इच्छा शक्ति और पुरूषार्थ से ही सम्पन्न होते हैं। जो व्यक्ति किसी लक्ष्य को लेकर संकल्प करते हैं और उसे पूरा करने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देते हैं ऐसे मनुष्य ही राष्ट्र की उन्नति में सहायक होते हैं और राष्ट्र का गौरव बनते हैं। आने वाली पीढ़ियां ऐसे लोगों को अपना आदर्श बनाती हैं और उनके मार्ग का अनुसरण करती हैं। वही राष्ट्र उन्नति कर सकता है जिस राष्ट्र के लोग दृढ़ इच्छा शक्ति से युक्त तथा चरित्रवान होते हैं। ऐसे लोगों के द्वारा राष्ट्र का गौरव बढ़ता है।

आज हमारे देश के नवयुवक इन्जीनियरिंग, विज्ञान, कृषि आदि सभी क्षेत्रों में उन्नति कर रहे हैं परन्तु दुर्भाग्यवश भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और बेईमानी बढ़ रही है। इसका एकमात्र कारण यह है कि नवयुवकों के चरित्र निर्माण की ओर किसी का ध्यान नहीं है। कभी हमारा देश जिस चरित्र की महानता के लिए विश्व में प्रसिद्ध था आज उसी देश के चारित्रिक मूल्यों का दिन-प्रतिदिन पतन हो रहा है। चारित्रिक मूल्यों का पतन होने के कारण ही हमारा सांस्कृतिक पतन हो रहा है, हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। चरित्र के नष्ट हो जाने से सब कुछ नष्ट हो जाता है।

आज देश के गिरते हुए नैतिक स्तर को उठाने के लिए बालकों का चरित्रवान बनना परमावश्यक है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजें एवं शिक्षण संस्थाएं इस कार्य की ओर विशेष ध्यान दें। युवा पीढ़ी के अन्दर नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए एवं चरित्रवान बनाने के लिए ग्रीष्मकालीन अवकाश में अपने-अपने जिलों में वैदिक चेतना शिविर, आर्य वीर दल शिविर, युवा चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन करें। युवाओं को अपनी मुख्य वैदिक विचारधारा से जोड़ने के लिए सभी आर्य समाजें एवं शिक्षण संस्थाएं विशेष ध्यान दें। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इस कार्य के लिए आपको हर प्रकार से सहायता देगी। सभा में बाल सत्यार्थ प्रकाश और अन्य वैदिक सिद्धान्तों से अवगत कराने वाला साहित्य हमेशा उपलब्ध है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के छठे नियम में निर्देश दिया है कि उन्नति तीन प्रकार की होती है-शारीरिक उन्नति, आत्मिक उन्नति एवं सामाजिक उन्नति। आज की युवा पीढ़ी की शारीरिक उन्नति के लिए उन्हें नशे जैसी बुराईयों से दूर करना है, आत्मिक उन्नति के लिए वैदिक सिद्धान्तों से युक्त शिक्षा देने की जरूरत है। जब युवा शारीरिक रूप से बलवान होगा, मानसिक व आत्मिक रूप से मजबूत होगा तो सामाजिक उन्नति स्वयमेव हो जाएगी और समाज एवं राष्ट्र समृद्ध होगा।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

वेदों में नारी की स्थिति

ले.-शिवरानारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

जब विवाह तय हो जाता है, तब यज्ञ मण्डप में आकर वर-वधू घोषण करते हैं-

समञ्जन्तु विश्वेदेवा समापो हृदयानि नौ।

सं मातरिश्वा सं धातु समुदेष्ट्री दधातु नौ।। ऋ. 10.85.47

हे (विश्वे) समस्त (देवा:) विद्वत्जन। (समञ्जन्तु) अच्छी प्रकार जानो (नौ) हम पति और पत्नी दोनों (सम् आप:) पानी के समान एक हैं, (हृदयानि) हृदय (मातरिश्वा) वायु हम दोनों के हृदय को (संदधातु) समान करे। (धाता) सूर्य (संदधातु) समान करे (देष्टी) सरस्वती (सम् दधातु) समान करे (नौ) हम दोनों का।

फिर वर वधु का हाथ थामकर कहता है-

भगस्ते हस्तम ग्रहीतसविता हस्तमग्रहीत।

पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव।। अथर्व. 14.1.51.

(भग:) ऐश्वर्यवान् परमात्मा ने (ते) तेरा (हस्तम्) हाथ (अग्रहीत) पकड़ा है। (धर्मणा) धर्म से (त्वम्) तू (पत्नी) मेरी पत्नी (असि) है। (अहम्) मैं (त्वा) तेरा (गृहपति) गृहपति हूँ।

वर उसी विषय को आगे बढ़ाते हुए कहता है-

ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद् बृहस्पति।

मया पत्या प्रजावाति सं जीव शरदः शतम्।। अथर्व. 14.1.53

यह पत्नी मेरे पोषण योग्य होवे। मुझको तुझे बड़े लोकों के स्वामी ने दिया है। तू मुझ पति के साथ सौ वर्षों तक जीति रहे। विवाह से पूर्व कन्या का पिता वर से कहता है-हे वर। तू उठ, इस कन्या को स्वीकार कर जिससे यह कन्या पति वाली होवे। तू अपने से भिन्न गोत्र वाली, किसी के घर न ले जाई गई, माता-पिता पर आश्रित, स्पष्ट यौन वाली इस कन्या को चाह। तेरा यही भाग है इसमें स्वयं पुत्र रूप में उत्पन्न होने के लिए जान। (ऋ. 10.85.21)

विवाह के साथ ही वर कहता है-हे वधू। मैं तुझे ब्रह्मचर्य नियम के उस बन्धन से मुक्त करता हूँ जिसे कल्याण चाहने वाले तुम्हारे पिता ने बांध रखा है। सत्याचरण के स्थान और सत्कर्म के क्षेत्र इस गृहस्थाश्रम में मुझ पति के साथ तुझे निरापदा करता हूँ। (ऋ. 10.85.24)

यज्ञ मण्डप में वधू वर से कहती है-**अहं वदामि नेत् त्वं सभायामह त्वं वद।**

ममेदसस्त्वं केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन।। अथर्व. 7.38.4.

(अहम्) मैं (न इत्) अभी (वदामि) बोल रही हूँ (त्वम् त्वम्) तू तू (अह) भी (वद) बोल। (त्वम्) तू (केवल:) केवल (मम इत्) मेरा ही होवे (चन) और (अन्यासाम्) दूसरी स्त्रियों का (न कीर्तिया:) तू न ध्यान कर।

विवाह के अवसर पर कन्या का पिता कन्या को दहेज के रूप में अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार कुछ वस्त्र, आभूषण, नकद धन देता है तथा बारातियों के लिए रास्ते में खाने के लिए कुछ पकवान भी भेंट करता है-**इदं हिरण्यं गुल्गुल्वयमौक्षो अथो मग:।**

एते पतिभ्यस्त्वामदु: प्रतिकामाय वेत्तवे।। अथर्व. 2.36.7

(इदम्) यह (हिरण्यम्) स्वर्ण और (गुल्गुलु) गुलगुले (अथो) और (अयम्) यह (औक्ष:) महात्माओं के योग्य (भग:) ऐश्वर्य है। (एते) इस कन्या पक्ष वालों ने (पतिभ्य:) पति पक्ष वालों के हितार्थ (त्वाम्) तुझे (प्रतिकामाय) प्रतिज्ञा पूर्वक कामना योग्य (पति) के लिए (वेत्तवे) लाभ पहुंचाने को (अदु) दिया है।

विवाह में माता-पिता और सम्बन्धी लोग वधू को देय वस्तु के साथ यज्ञाग्नि की परिक्रमा कराते हैं। पुन: यह यज्ञाग्नि प्रजा को उत्पन्न करने वाली इस वधू को पति के प्रति प्रदान करता है।

विवाह के बाद वधू पर गृहस्थी को ठीक प्रकार से चलाने का उत्तरदायित्व आ जाता है। इस विषय में कहा है-**भगस्य नावमारोह पूर्णामनुपदस्वतीम्।**

तयोप्रतारय यो वर: प्रतिकाम्यं। अथर्व. 2.36.5

हे वधू। (भगस्य) ऐश्वर्य की (पूर्णाम्) भरी भरायी और (अनुपदस्वतीम्) अटूट (नावम्) नाव पर (आ रोह) चढ़ और (त्तया) इस (नाव) से अपने वर को (उप (प्रतारय) आदर पूर्वक पार लगा (य:) जो (वर:) वर (प्रति काम्य:) प्रतिज्ञा करके चाहने योग्य है।

आ ते नयतु सविता पतिर्य: प्रतिकाम्य:।

तमस्यै धेह्योषधे।। अथर्व. 2.36.8

हे (वधू) (सविता) सर्व प्रेरक परमेश्वर (ते) तेरे लिए (उस पति को) (आ नयतु) मर्यादा पूर्वक चलावे और (नयतु) नायक बनावे (य: पति) जो पति (प्रतिकाम्य:) प्रतिज्ञापूर्वक चाहने योग्य है। (ओषधे) हे ताप नाशक परमात्मा। (त्वम्) तू (अस्यै) इस कन्या के लिए (उस पति को) (धेहि) पुष्ट कर।

पत्नी धन की रक्षा करे। उसको आदरपूर्वक बुलावे और सदा उसे अपने दाहिनी ओर रक्खे। इस विषय पर कहा गया है-**आ क्रन्दय धनपते वरमामनसं कृणु।**

सर्वं प्रदक्षिणं कृणु यो वर: प्रतिकाम्य: अथर्व. 2.36.6

(धनपते) हे धनों की रक्षा करने वाली कन्या (वरम्) वर को (आ) आदर पूर्वक (क्रन्दय) बुला और (आमनसम्) अपने मन के अनुकूल (कृणु) कर (य:) जो (वर:) वर (प्रतिकाम्य:) नियम करके चाहने योग्य है। वधू को सम्मान सहित माता पिता के घर से पति के गृह ले जाया जावे। इस विषय में कहा गया है-

पूषा त्वेतो नयतु हस्त गृह्यचार्श्विना त्वा प्र वहतां रथेन।

गृहान्गच्छ गृह पत्नी यथासो वशिनी त्वं विदथमा वदासि।। ऋ. 10.85.26

हे वधू। (पूषा) पोषण करने वाला वर (त्वा) तुझे (इत:) इस पितृ गृह से (हस्तगृह्य) पाणिग्रहण करके (नयतु) ले जावे। (अश्विना) पति के सम्बन्धी (त्वा) तुझे (रथेन) रथ से (प्रवहताम्) ले जावें। (गृहान्) गृहों को (गच्छ) जा (यथा) जिससे (गृह पत्नी) गृहपत्नी (अस:) हो। (वशिनि) सब भृत्य आदि को वश में करने वाली (त्वम्) तू (विदथम्) पतिगृह के भृत्य आदि जनों को (आ वदासि) उत्तम वचन बोल।

पति गृह में पहुंचने पर वधू के सम्मान में यज्ञ किया जाता है। जिसमें सभी सम्बन्धी एवं अन्य परिवार के मित्र लोग सम्मिलित होते हैं। वधू को भेंट तथा आशीर्वाद देते हैं।

सुमङ्गलीरियं वधूरिमा समेत पश्यत।

सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं वि परेतन।। ऋ. 10.85.33

(इदम्) यह (वधू:) वधू (सुमङ्गली:) शुभ सौभाग्यकारिणी है (सम आ इत) आप लोग आइये (पश्यत) देखिये (अस्य) इसे (सौभाग्यम्) सौभाग्य का आशीर्वाद (दत्वाय) देकर (अथ) अनन्तर (अस्तम) गृह को (वि परेतन) जाइये। विवाह के बाद भी वर के माता पिता यह आग्रह करते हैं कि वे उनके साथ ही रहें, अलग गृह बसाकर पृथक् न रहें।

इहै वस्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।

क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिमोदमानौ स्वेगृहे।। ऋ. 10.85.42

हे वर और वधू। (इह) यहां (एव) ही (स्तम्) रहो (मा) नहीं (वियौष्टम्) वियुक्त हो (विश्वम्) पूर्ण (आयु:) आयु को (व्यश्नुतम्) प्राप्त करो (स्वे) अपने (गृहे) घर में (पुत्रै:) पुत्रों (नप्तृभि) पौत्रों और नातियों के साथ (मोदमानो) प्रसन्न होते हुए (क्रीडन्तौ) खेलते हुए (स्तम्) रहो।

परिवार में वधू की स्थिति क्या रहेगी इस विषय में ऋग्वेद 10.85.46 में स्पष्ट वर्णन इस प्रकार है-

सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्रूवां भव।

ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु।। 10.85.46

हे वधू। तू (श्वशूरे) श्वसुर के अधीन (साम्राज्ञी) साम्राज्ञी (भव) हो। (श्वश्रुवा) सासु के अधीन

(शेष पृष्ठ 7 पर)

श्री राम के ज्योतिर्मय रथ के आयाम-अभिराम

- ले. देव नारायण भारद्वाज:अलीगढ़ (उ. प्र.)

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती ने वाल्मीकि रामायण का भाष्य करते समय युद्ध-काण्ड में जहाँ राम-रावण के घनघोर संग्राम का वर्णन किया है, वहाँ उन्होंने राम-चरित मानस में उल्लिखित राम के रथ का विस्तार पूर्ण आख्यान प्रस्तुत किया है। यह लेखक भी उसे प्रदर्शित करेगा। पहले देखते हैं कि वेद जिस रथ का वर्णन करते है, उसका ही परिरक्षण करके, कोई भी योद्धा श्री राम के आदर्श को अपने जीवन में अनुभूत कर सकता है।

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्व मानशुः।

ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये।। (ऋ. 10.63.4)

अर्थात-केवल स्वार्थ के वशीभूत न होकर सब मनुष्यों का ध्यान रखने वाले, प्रमाद न करते हुए, प्रभु अर्चना के द्वारा वर्धनशील देववृत्ति के पुरूष अमृतत्व को प्राप्त करते हैं। ज्योतिर्मय रथ वाले-जिनका शरीर रथ ज्ञान-प्रभा से प्रकाशित हो रहा है, जिनकी बुद्धि में किसी प्रकार की न्यूनता न हो, जीवन निष्पाप हो, ऐसे ही व्यक्ति ज्ञान के शिखर पर पहुँचकर उत्तम जीवन के स्वामी होते है। अन्य मन्त्र ऐसे ज्योतिर्मय रथ को और अधिक स्पष्ट करता है। **सत्यं बृहत् ऋतंउग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवी धारयन्ति। सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।। (अथर्व 12.1.1)**

अर्थात सत्य व्यवहार, उद्यमशीलता, सरल निश्छल कार्य प्रणाली, उग्र पुरूषार्थ, नियमनिष्ठायुक्त नीति निपुणता, द्वन्द्व सहनकर कार्य पूर्णता, आस्तिकतापूर्ण विज्ञान, मिलकर कार्य करने की भावना, के गुण पृथिवी को धारण करते हैं। उसकी स्वाधीनता को सुरक्षित करते हैं। वही अपने पुत्र नागरिकों की रक्षा करती है। भूमि के लक्षणों को देखते हुए मन्त्र में आठ ही नहीं नौ गुण बनते हैं। इनकी सामूहिक शक्ति से प्रादुर्भाव होता है श्री राम समान महापुरुष का-यही राम नवमी का सन्देश है। ग्रन्थ कठोपनिषद का समर्थन भी देख लीजिये-

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीर रथमेवतु।।

बुद्धि तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।।

इन्द्रियाणि हयानाहु र्विधयांस्तेषु गोचरान्।।

आत्मेन्द्रियम नोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः।।

अर्थात-आत्मा को या अपने आप को रथ पर सवार समझ, शरीर को रथ, बुद्धि को सारथी, मन को लगाम और इन्द्रियों को घोड़े समझ, इन्द्रियों के विषयों को मार्ग समझ, जिन पर घोड़ों के द्वारा रथ चलता है। मन और इन्द्रियों से युक्त आत्मा को भोक्ता-भोगने वाला कहते हैं। मनीषी या इनका स्वामी वही समर्थ है; जो इनको नियन्त्रण में रखता है। विषय वस्तु को मनोगम्य स्वच्छ करने के लिए राम चरित मानस देखते है।

रावनुरथी बिरथ रघुबीरा। देखि विभीषन भयउ अधीरा।।

अधिक प्रीति मन भा सन्देहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा।।

नाथ न रथ नहिं तन पदत्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना।।

सुनहु सखा कह कृपा निधाना। जेहि जय होइ सो स्यदंन आना।।

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्यशील दृढ़ ध्वजा पताका।।

बल बिबेक दम पर हित धीरे। क्षमा कृपा समंता रजु जोरे।।

ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना।।

दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन को दण्डा।।

अमल अगममन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना।।

कवच अभेद बिप्र गुर पूजा। एहिसम बिजय उपाप न दूजा।।

महा अजय संसार रिपु, जीति सकइ सो बीर।

जाके अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखामति धीर।।

सुनि प्रभु बचन बिभीषन, हरषि गहे वद कंज।

एहि मिस मोहि उपदेसेहु, राम कृपा सुखपुंज।।

ग्रन्थ में अंकित वर्तनी को यहां पर यथावत रखा गया है। इन पंक्तियों का निहितार्थ इस प्रकार समझना चाहिए। मानव की योनि (शरीर) को रथ बताया गया है। इसमें रहने वाली आत्मा ही इस पर सवार रथी है; जब तक यह इसमें निवास करती है, तभी तक वह रथी कहलाती है, उसके निकल जाने के बाद मृत देह-अरथी रह जाती है, और अन्त्येष्टि की पात्र मात्र रह जाती है। गोस्वामी तुलसी दास ने इस रथ-रथी-सारथी-घोड़े-घोड़ों को रथ से जोड़ने वाली रस्सी, उसकी ध्वजा-पताका-अस्त्र-शस्त्र-वाण-धनुष-तरकश-ठाल-तलवार आदि के माध्यम से वैदिक दर्शन के सभी सिद्धान्तों का उल्लेख कर दिया है। यहाँ पर संकेत रूप में धर्म के लक्षण, अष्टांगयोग के यम-नियम, और षट्क सम्पत्ति आदि की सकल सारणी प्रस्तुत कर दी गयी है। प्रस्तुत अथर्व-मन्त्र में भूमि को जोड़कर जो नव शक्ति पुंज बनते है, उनके परिपालन से कोई भी व्यक्ति आदर्श पुरूष बनता है, जिन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम में सहज ही देखा जा सकता है। मानव मात्र के मार्ग दर्शन के लिए रामनवमी पर्व प्रतिवर्ष यही नवल सन्देश लेकर आता है।

महर्षि विश्वामित्र के साथ मिथिला जाते हुए मार्ग में पड़े सुनसान आश्रम में उपेक्षित रह रही देवी अहल्या के, अनुज लक्ष्मण सहित चरण स्पर्श करके उनको सम्मानित कर उन्हें समाज में फिर से प्रतिष्ठित किया। यह उनके सत्य व्यवहार का एक नमूना है। जो अन्य राज्य-योद्धाओं द्वारा ठस से मस न हुआ, उसी महान धनुष को श्री राम ने न केवल उठा लिया, उस पर चिल्ला भी चढ़ा दिया, घनघोर शब्द घोष करके वह भङ्ग भी हो गया, यह श्री राम के उद्यमशील बड़प्पन का परिचायक है। जनकपुरी में सकल निश्छल व्यवहार छवि को देखकर नगर की नारियां श्री राम को सीता के वर के रूप में देखने लगी थी। महर्षि परशुराम ने एक अन्य धनुष श्री राम को देकर उसका प्रयोग करके उनके बल-वीर्यता का परीक्षण किया; जिसमें वह पूर्ण सफल हुए जो श्री राम को उग्र वीरता का द्योतक है। श्री राम की दीक्षा या व्रतनीति निपुणता का इसी से परिचय होता है कि वे विद्या स्नातक ही नहीं व्रत स्नातक भी थे। वेद-वेदांग व शस्त्र विद्या के विशेषज्ञ होने के कारण ही प्रजा मण्डल ने श्री राम के राज्याभिषेक की सहमति प्रदान की थी। हानि-लाभ, सुख-दुःख, ग्रीष्म-शीत के तप का प्रभाव श्री राम के जीवन में पदे पदे देखने को मिलता है। नियमित रूप से यज्ञ-संध्या-उपासना रूपी ब्रह्म वर्चस श्री एम के चरित्र में भरपूर समाहित परिलक्षित होता है। बड़ों का पूजन-सम्मान, छोटे से स्नेह सहचर्य, अवसर के अनुसार वस्तु-व्यक्ति व परिस्थिति से संगतीकरण तथा पिता की प्रतिष्ठा तथा मातृ-नेह निष्ठा स्वरूप चक्रवर्ती राज्य का सिंहासन सहर्ष अनुज को भेट कर देना-श्री राम का यज्ञोद्गार है। स्वर्णमयी लंका के प्रति प्रलोभित न होकर जननी-जन्मभूमि को स्वर्ण से अधिक गौरव-गरिमा प्रदान करना श्री राम की देश भक्ति का न्यादर्श है। यही सब श्री राम की रामनवमी की पूर्णता है।

राक्षस राज रावण से जीवन-मरण के महायुद्ध में उसकी पराजय होने पर उसके समीप जाकर मार्ग दर्शन प्राप्त करने को आदेश दिया। वे उसके पास जाकर सिर होने खड़े होकर वार्तालाप के इच्छुक हुए। रावण मौन रहा। लौटकर राम को सारी स्थिति बताई। राम ने फिर से भेजा और कहा रावण के पैंताने खड़े होकर अभिवादन पूर्वक पूछना-वह अवश्य आपको ज्ञान देगा। यही हुआ और रावण बहुत सुख पूर्वक ज्ञान दान हेतु उद्यत हो गया। श्री राम हर कार्य में सफलता का श्रेय अपने सहयोगी को देकर उसके हृदय को जीत लेने में निपुण थे। रावण वध के बाद हर्षातिरेक में मग्न होकर जब दुदुंभि बजाने की राम से अनुमति चाही, तब अंगद ने इस

(शेष पृष्ठ 7 पर)

यज्ञ के लाभ

ले.-पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री, 4-E, कैलाश नगर, फाजिल्का, पंजाब

1. वैदिक एवं लौकिक सभी ग्रन्थों में यज्ञ का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है-

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।। शतपथ. 1.7.1.5

निश्चय ही यज्ञ एक सर्वश्रेष्ठ अर्थात् सर्वोत्तम कर्म है।

यज्ञ के साथ ही लोकहित के लिए किए गए समस्त कार्य भी यज्ञ के अन्तर्गत आ जाते हैं।

महात्मा हंसराज का जीवन वस्तुतः यज्ञमय था। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन डी.ए.वी. कॉलेज को दान कर दिया था। कोई वेतन नहीं। घर आकर बड़े भाई मुल्खराज को बताया। उन्होंने कोई नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। बोले- 'अच्छा, मेरा आधा वेतन आपका।' उन्हें 80 रुपये मिलते थे। 40 रुपये हंसराज के निश्चित हो गए।

महात्मा हंसराज का जीवन त्यागमय था ही। परन्तु उससे भी बड़ा त्याग भाई का था। मुल्खराज का जीवन भी यज्ञमय बन गया। कितना श्रेष्ठतम कर्म कर गए। आज यह दोनों ही महापुरुष आदर्श ही नहीं अपितु प्रकाश-स्तम्भ भी हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द का त्याग भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। जिन्होंने महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के प्रचार-प्रसार हेतु हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। केवल इतना ही नहीं, अपने दोनों पुत्रों-हरिश्चन्द्र और इन्द्र को सर्वप्रथम प्रविष्ट करा कर एक ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत किया। अन्त में राष्ट्र, आर्य समाज एवं जनहित में अपना बलिदान दे दिया। भला इससे श्रेष्ठकर्म और क्या हो सकता है? यह है यज्ञमय जीवन!

2. आयुयज्ञेन कल्पताम्।। यजु. 9/21

यज्ञ आयुवृद्धि में समर्थ है।

यज्ञ से हमारा जीवन समर्थ शक्तिशाली बनता है।

3. यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्।। यजु. 9/21

यज्ञीय भावना से किया गया हमारा यज्ञ सफल हो। परोपकार की भावना से किया गया यज्ञ विघ्न बाधाओं से रहित हो।

यज्ञ से निकली हुई सुगन्ध बिना किसी भेदभाव के सभी के पास पहुंचती है। सभी का कल्याण होता है। केवल मनुष्यों का ही नहीं, अन्य जीव-जन्तुओं को भी लाभ होता है। शुद्ध वायु सभी को मिलती है।

4. यज्ञे प्रतिष्ठिता लोकः।। अथर्व. 12/5/3

यह संसार देवपूजा-विद्वानों का सत्कार, सत्संगति शिल्प विद्या, शुभ गुणों और धनादि-दान के यज्ञ में स्थित है।

यज्ञ का अन्य नाम अग्निहोत्र भी है जिसका अर्थ बताते हुए महर्षि दयानन्द कहते हैं-

अग्नये परमेश्वराय जलवायु-शुद्धिकरणाय च होत्रं हवनं यस्मिन् कर्मणि क्रियते तद् अग्नि होत्रम्।। पंचमहायज्ञविधि

अग्नि अर्थात् परमेश्वर के लिए, जल और पवन की शुद्धि तथा ईश्वर की आज्ञा पालन के अर्थ होत्र, जो हवन करते हैं, उसे अग्निहोत्र कहते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हमारी यज्ञ के प्रति श्रद्धा हो तभी यह कार्य सम्यक् प्रकारेण सम्पन्न हो सकता है वेद कहता है-

5. श्रद्धया अग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।। ऋ 10/15/1

श्रद्धा से ही यज्ञ की अग्नि को प्रज्वलित किया जाता है। श्रद्धा से ही आहुति दी जाती है।

श्रद्धा न हो तो यह पुण्य कार्य नहीं हो सकता।

यज्ञो देवानां प्रत्येति।। यजु. 8/4

यह देवों का यज्ञ अर्थात् देवयज्ञ प्रतिदिन आता है अतः यज्ञ हमें प्रतिदिन करना चाहिए। क्योंकि यज्ञ करना दैनिक कार्यों में सम्मिलित है।

अतः इस ईश्वरीय आज्ञा का पालन करें-

हविर्धानं अग्निशालम्...।। अथर्व. ९/३/७

हे मनुष्यों! अपने घर में हव्यादि पदार्थ रखने का स्थान अर्थात् भण्डार गृह और यज्ञशाला अवश्य बनाएं।

आजकल भी लोग अपने घरों में पूजार्थ मन्दिर अवश्य बनाते हैं। उसी को यज्ञशाला भी समझना चाहिए। उसी मन्दिर के सम्मुख बैठकर दैनिक यज्ञ कर सकते हैं। छोटा हवनकुण्ड छः इंच लंबा, चौड़ा और गहरा तांबे का बना बनाया मिल जाता है। यदि अन्य मन्त्र नहीं आते तो तीन आचमन करके गायत्री मन्त्र से ग्यारह आहुतियां अवश्य समर्पित करें। परन्तु दैनिक यज्ञविधि सीखने के लिए अवश्य प्रयत्नशील रहें।

6. ईश्वरीय आज्ञापालन करने अर्थात् यज्ञ करने से हम पाप से बचते हैं। क्योंकि यज्ञ न करना पाप है। ईश्वर स्तुति प्रार्थना-उपासना के अन्तर्गत हम परमात्मा से यही प्रार्थना करते हैं-

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव/ यद् भद्रं तन्न आसुव।। यजु. 30/3

हे परमात्मन् देव! हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए। जो कल्याण कारक गुण, कर्म स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कराइए।

परोऽपेहि मनस्पाप किम-शस्तानि शंससि।।

हे मेरे मन के पाप! तू दूर हट जा। तू बुरी बातों को क्यों पसन्द करता है, उनकी प्रशंसा क्यों करता है?

इस प्रकार यज्ञ के समय बार-बार चिन्तन करने से यह मन का पाप दूर भाग जाता है। मन शुद्ध पवित्र और निर्मल हो जाता है। निरन्तर यही प्रार्थना करनी चाहिए-

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।। यजु. 19/39

(देवजनाः) विद्वज्जन श्रेष्ठ ज्ञानी लोग विद्यादान से (मा) मुझे (पुनन्तु) पवित्र करें। (मनसा) आपके द्वारा प्रदत्त मानसिक ज्ञान विज्ञान और ध्यान से (धियः) बुद्धियां पवित्र हों। (विश्वा भूतानि) सभी सांसारिक प्राणी हमें पवित्र करें। हे परमात्मन् देव! (मा) मुझे (पुनीहि) पूर्णरूपेण पवित्र करो।

7. यज्ञकर्ता का सम्मान बढ़ता है। लोग कहते हैं-

हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि।।

हे सम्माननीय यज्ञशील होता! आइए। हे यज्ञकर्ता! आइए, विराजिए। ऐसा कह कर लोग सम्मान पूर्वक बुलाते हैं।

प्रजानन् यज्ञं उपयाहि विद्वान्।। यजु. 8/20

यज्ञ के विधि विधान को भली प्रकार जानने वाले हे विद्वान्! हमारे समीप आइए। आपके सम्पर्क में आते रहने से हमारी यज्ञीयवृत्ति सदा बनी रहेगी और यह यज्ञकार्य सदा चलते रहेंगे।

8. यज्ञ में औषधीय जड़ीबूटियों से तैयार हवन सामग्री से दी गई आहुतियां विभिन्न प्रकार के रोगों से बचाती हैं। यज्ञ से रोगकृमि मर जाते है या भाग जाते हैं।

9. आयुर्वेद के अनुसार वात, पित्त और कफ इन तीनों में विकार आने से अथवा तीन प्रकार के दुःख दैहिक (शारीरिक), दैविक (प्राकृतिक) और भौतिक एक प्राणी से दूसरे प्राणी को दुःख होना, शारीरिक, आत्मिक और मानसिक इन तीनों प्रकार के दुःखों के नाश का सर्वश्रेष्ठ उपाय यज्ञ है-

यस्माद् वा त्रायते दुःखाद् यजमानं हुतोऽनलः।

तस्मात् तु विधिवत् प्रोक्तमग्निहोत्रमिति श्रुतम्।।

वृद्ध गौतम स्मृति 15/43

जिस अग्नि में आहुति प्रदान करने से यजमान दुःखों से मुक्त हो जाता है, इसीलिए उसे वेद में विधिपूर्वक अग्निहोत्र कहा गया है।

हुत्वाऽऽज्यं विधिवत्पूर्वं ऋग्भिः षोडशभिस्तथा।

समिधोऽश्वत्थ वृक्षस्य हुत्वाज्यं जुहुयात् पुनः।।

बृहत्पराशर स्मृति 11/307

इस प्रकार पूर्वोक्त पंच महायज्ञों को करते हुए प्रतिदिन पीपल की समिधा और घी, सामग्री आदि से नित्य कर्म की सोलह आहुतियों के साथ ऋग्वेद के मन्त्रों से भी यज्ञ करें।

स्वस्थ, बलवान् नीरोग होने और दीर्घायु प्राप्त कराने वाला यज्ञ ही है।

10. स्वर्ग कामो यजेत।।

स्वर्ग अर्थात् सुख की कामना करने वाला व्यक्ति प्रतिदिन यज्ञ करे साथ ही मन्त्रोपदेशानुसार आचरण भी करना चाहिए।

11. यज्ञ से वर्षा होती है। वर्षा से अन्न होता है। अन्न से प्राणी जीवित रहते हैं।

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न सम्भवः।

यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः।। गीता 3/14

सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं अर्थात् अन्न से ही जीवन धारण करते हैं। अन्न वर्षा से उत्पन्न होता है। वर्षा यज्ञ से होती है। यह यज्ञ कर्म से उत्पन्न होने वाला है।

अतः उचित फल प्राप्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ करना चाहिए। **(क्रमशः)**

आत्मिक शान्ति यज्ञ

आज आर्य समाज मन्दिर फिरोजपुर छावनी में रविवारीय यज्ञ में आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के माननीय प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के पूज्य माता श्रीमती राज कुमारी शर्मा जी की पुण्य तिथि पर माता जी को आत्मिक शान्ति और सद्गति के लिये विशेष प्रार्थना की गई। ईश्वर करे इनके आशीर्वाद से उनका सारा परिवार और आर्य समाज फलता-फूलता रहे।

अन्त में माननीय प्रधान श्री विजय आनन्द जी ने निम्नलिखित मनोभाव से श्रद्धांजलि दी।

''मत शोक करो रो के
वो गए हैं सफल हो के''

(मनोज आर्य)
(महामन्त्री)

महर्षि दयानन्द के उपकार

जगतगुरु दयानन्द थे, ईश्वर भक्त महान।
देश भक्त धर्मात्मा, अजब वेद विद्वान।।
अजब वैदिक विद्वान, तपस्वी परोपकारी।
मानवता के पुंज, महायोगी ब्रह्मचारी।।
जीव मात्र का भला किया, प्यारे स्वामी ने।
जग को वैदिक ज्ञान दिया, प्यारे स्वामी ने।।

प्यारे ऋषि का लक्ष्य था, स्वर्ग बने संसार।
जीवन भर ऋषि ने किया, पावन वेद प्रचार।।
पावन वेद प्रचार, सकल संसार जगाया।
झेले भारी कष्ट, नहीं योगी घबराया।।
मुल्ला पण्डे पोप, पुजारी धूर्त उद्दण्डी।
ऋषि ने किये परास्त, कुचाली खल पाखण्डी।।

दुनियां में फिर हो गया, शैतानों का जोर।
ढोंगी कपटी धूर्त जन, मचा रहे हैं शोर।
मचा रहे हैं शोर विश्व में, ढोंगी ठगिया।
पापी रहे उजाड़, जगत रूपी अब बगिआ।।
लाखों गउएं नित्य, यहां मारी जाती हैं।
ललनाओं की लाज रही लुट, चिल्लाती हैं।

आर्य समाजी परस्पर, झगड़ रहे हैं रोज।
पता नह' किस चीज की, करते हैं ये खोज।।
करते हैं ये खोज, जगत को कौन बचाए।
अचरज की है बात, बाड़ खेतों को खाए।।
जो करते अभिमान, कष्ट भारी पाते हैं।
लड़-भिड़कर नादान, एक दिन मिट जाते हैं।।

जागो प्यारे आर्यो! मिलकर करो विचार।
जगत गुरु दयानन्द के, मत भूलो उपकार।।
मत भूलो उपकार, आर्यो! धर्म निभाओ।
स्वामी श्रद्धानन्द, लाजपतं, बन दिखलाओ।।
अविद्या रूपी अन्धकार, अज्ञान मिटाओ।
'नन्द लाल' कुछ काम, भलाई के कर जाओ।।

-पं. नन्द लाल निर्भय 'सिद्धानताचार्य
ग्राम बहीन, पलवल, मो. 9813845774

**

पृष्ठ 4 का शेष-वेदों में नारी की स्थिति

(साम्राज्ञी) साम्राज्ञी (भव) हो (ननान्दरि) ननदों के मध्य (साम्राज्ञी) साम्राज्ञी (भव) हो और (देवृषु) देवरों के (अधि) बीच में (साम्राज्ञी) साम्राज्ञी (भव) हो।

वधु के सासु और ससुर भी उसका स्वागत करते हैं और उसे नाना प्रकार के उपहार देते हैं।

शं ते हिरण्यं शमु सन्त्वापः शं मेथिर्भवतु युगस्य तद्मं।

शं त आपः शतपवित्रा भवन्तु शमु पत्या तन्वं सं स्पृशस्व।। अथर्व. 14.1.40

(हे वधू) (ते) तेरे (हिरण्यम्) स्वर्ण आभूषण आदि (शम्) सुखदायक हो, (उ) और (आप) प्रजाएं (सन्तान, सेवक आदि) (शम्) शांति कारक (सन्तु) होवें। (मेथिः) पशु बांधने का काष्ट दण्ड (शम्) आनन्द प्रद और (युगस्य) जुये का (तद्मं) छिद्र (शम्) शांति दायक (भवतु) होवें। (ते) तेरे लिए (शत पवित्रताः) सैंकड़ों प्रकार के शुद्ध करने वाले (आपः) जल (शम्) सुखदायक (भवन्तु) होवें। (शम्) शांति के लिए (उ) ही (पत्या) पति के साथ (तन्वम्) अपनी श्रृद्धा को (सं स्पृस्व) संयुक्त कर।

गृह कार्यों में पति आदि सब वधु की सहायता करें।

शर्म वर्मेतदाः हरास्यै नार्या उपस्तरे।

सिनीवालि प्रजायतां भगस्य सुमतावसत्।। अथर्व. 14.2.21

हे विद्वान। (एतत्) यह (गृह कार्य रूप) (शर्म) सुखदायक (वर्म) कवच (अस्यै नार्ये) इस नारी को (उप स्तरे) ओढ़ने के लिए (आ हर) ला। (सिनी वालि) हे अन्न वाली पत्नी। (तुझसे) (प्रजायताम्) उत्तम संतान होवे और वह (सन्तान) (भगस्य) ऐश्वर्यवान् परमात्मा की (सुमतौ) सुमति में (असत्) रहे।

वधू का भी कर्त्तव्य है कि अपने व्यवहार से सभी को प्रसन्न रखें।

स्योना भव श्व सुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः।

स्योनास्ये सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषां भव।। अथर्व 14.2.27

(हे वधू।) तू (श्वसुरेभ्यः) ससुर आदि के लिए (स्योना) सुख देने वाली (पत्ये) पति के लिए और (गृहेभ्यः) घर वालों के लिए (स्योना) सुख देने वाली (भव) हो। (अस्ये) इस (सर्वस्यैविशे) सब प्रजा के लिए (स्योना) सुख देने वाली और (एषाम्) इनके (पुष्टाय) पोषण के लिए (स्योना) सुख देने वाली (भव) हो। अथर्व. 14.1.63 में कहा गया है कि सब स्त्री, पुरूष प्रयत्न करें कि पितृ कुल से पृथक् होकर वधू प्रसन्न रहे और जैसे सुन्दर स्वच्छशाला के सुन्दर स्वच्छ द्वार में होकर जाने-आने में सुख होता है। वैसे ही सुप्रबन्ध वाले गृहाश्रम में वधू को सुख मिलें।

इसी प्रकार वेद में कहा गया है कि गृहस्थाश्रम रूपी यज्ञ में स्त्री का स्थान ब्रह्मा का है, जैसे यज्ञ में ब्रह्मा ही मुख्य होता है तथा अध्वर्यु, होता, उद्गाता को उसका आदेश मानना होता है, इसी प्रकार गृहस्थ में स्त्री का आदेश सभी को स्वीकार करना होता है।

इस छोटे से लेख में ही हम देखते हैं कि वेदों में स्त्री को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। चारों वेदों में 700 से भी अधिक मंत्र स्त्री विषयक ही है।

पृष्ठ 5 का शेष-श्री राम के ज्योतिर्मय...

मांग को सुन लिया और बजाने से मना कर दिया।

यह राम की जीत नहीं है-मेरी जीत है। मेरे पिता वानरराज बाली के दो शत्रु थे-एक रावण जिसे मारने में मैने अपनी जी-जान लगा दी। दूसरे स्वयं श्री राम, जिन्होंने मेरे पिता को मार दिया था। अब मेरा उनसे युद्ध होगा, जब वे जीत जायेंगे तभी दुन्दुभि बजायी जा सकेगी। यह सुनकर राम ने जो समाधान किया-वह अद्भुत है। राम ने कहा तुम्हारे पिता ने प्राणान्त के समय तुम्हारा हाथ मेरे हाथ में देकर तुम्हें मेरा पुत्र घोषित किया था हर पिता यही चाहता है कि पुत्र आगे बढ़कर पिता को जीतने वाला बने। अंगद! तुम जीत गये-तब अंगद ने हंसकर कहा-बजने दो दुन्दुभि।

आर्य समाज, आर्य समाज चौक पटियाला का चुनाव सम्पन्न

दिनांक 26 मई 2019 को आर्य समाज मंदिर, आर्य समाज चौक पटियाला का वार्षिक चुनाव आर्य समाज के प्रांगण में चुनाव अधिकारी श्री जितेन्द्र शर्मा जी के मार्ग दर्शन एवं देखरेख में शांतिपूर्ण एवं गरिमामय तरीके से सम्पन्न हुआ। इस चुनाव में श्री राज कुमार सिंगला जी को सर्वसम्मति व निर्विरोध रूप से आगामी वर्ष के लिये प्रधान चुन लिया गया। उल्लेखनीय है कि श्री राज कुमार सिंगला पिछले पांच वर्षो से आर्य समाज मंदिर, आर्य समाज चौक पटियाला का नेतृत्व कर रहे हैं। उनके द्वारा किये गये कार्यों की सभी सदस्यों ने प्रशंसा की और अपना विश्वास उनके प्रति प्रकट किया। सभी सदस्यों ने पुष्पमाला पहना कर श्री राज कुमार सिंगला जी का अभिनन्दन किया। श्री सिंगला जी ने सभी सदस्यों का धन्यवाद किया।

इससे पूर्व आर्य समाज मंदिर, आर्य समाज चौक पटियाला में रविवार का साप्ताहिक हवन यज्ञ श्री विजेन्द्र शास्त्री जी की देखरेख में हुआ। जिसमें सभी सदस्यों ने पवित्र वेदमंत्रों से यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। इस अवसर पर अपने सम्बोधन में श्री विजेन्द्र शास्त्री जी ने कहा कि मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए आवश्यक है कि उसका शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास साथ-साथ हो। सब मनुष्यों का यही ध्येय होना चाहिए, उसी में मनुष्य की महत्ता निहित होती है। इसी महत्ता से मनुष्य

श्री राज कुमार सिंगला आर्य समाज, आर्य समाज चौक पटियाला के सर्वसम्मति से प्रधान चुने गये। इस अवसर पर उनके साथ श्री वेद प्रकाश तुली जी, श्री वीरेन्द्र सिंगला जी, श्री विजेन्द्र शास्त्री जी, जितेन्द्र शर्मा एवं अन्य दिखाई दे रहे हैं।

धर्मात्मा, बुद्धिमान और निर्भीक बनता है। इन तीनों के बल पर मनुष्य चिन्ताओं से, परेशानियों और भय से मुक्त हो सकता है। मनुष्य की पहचान उसकी शक्ल सूरत, धन वैभव, वस्त्राभूषण से नहीं अपितु उसके चरित्र से, उसकी बातों से और उसके कार्यों से हुआ करती है। उसका चरित्र और कार्य ऐसा होना चाहिए जिससे उसी के द्वारा मनुष्य की प्रशंसा हो। इसी प्रकार धार्मिक, राजनैतिक और शैक्षणिक की पहचान उन मनुष्यों के द्वारा हुआ करती है जिन्हें ये प्रणालियां बनाया करती हैं। परन्तु आज मनुष्य का आचरण पशु की भांति दिखाई पड़ता है। आज का मनुष्य धन, सम्पति और भोग का दास बना हुआ है। आज मनुष्य की योग्यता, विद्वता, मान-सम्मान का मापदण्ड धन-वैभव बना हुआ है। शिक्षा का लक्ष्य आज जीविकोपार्जन हो गया है।

उन्होंने कहा कि आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य के जीवन का लक्ष्य श्रेष्ठ बने। जिससे मनुष्य अपनी सृजना को गौरवान्वित कर सके। सबसे बड़ी गड़बड़ मानव की भावना में स्वार्थ वृत्ति के आ जाने से तथा मनुष्य जीवन की उपयोगिता और महत्त्व को न समझने के कारण हुई। पतन का अनुपात विलासिता की आसक्ति के अनुपात में होता है। मनुष्य के स्वार्थी तथा विलासी होने से उसका पतन होता है। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह बुरे से बुरे कार्य करने के लिए प्रवृत्त हो जाता है। आज विलासिता और भोगवाद के कारण हमारी संस्कृति भोग प्रधान बन गई है। परमात्मा का डर उसके हृदय से निकल गया, मनुष्य परमात्मा के नियमों की उपेक्षा करके उसे चुनौती देने लग गया। ऐसी अवस्थाओं की कल्पना से भयभीत होकर ही दूरदर्शी तत्त्ववेत्ता यह कहने के लिए बाध्य हुआ कि यदि संसार में ईश्वर न भी होता तो संसार की सुख और शान्ति के लिए उसका आविष्कार करना पड़ता। आज मनुष्य ज्ञान-विज्ञान, कला कौशल, उद्योग-धन्धों, संगठित संस्थाओं, प्रणालियों आदि की दृष्टि से नियन्त्रित और सुव्यवस्थित है। इस अवसर पर वीरेन्द्र सिंगला, वेद प्रकाश तुली, जितेन्द्र शर्मा, हर्ष वधवा, गुलाब सिंह, निखिल रंजन शास्त्री, प्रो. वी.एस. बत्रा, रमन शर्मा, सुमन कोछड़, संगीता सिंगला, हंसराज, रमेश गंडोत्रा, श्री जुनेजा जी, सुषमा वधवा जी आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

प्रचार मंत्री

डा.सूर्यकान्त शोरी आर्य समाज बरनाला के प्रधान निर्वाचित

दिनांक 26.05.2019 को साप्ताहिक सत्संग के बाद मानयोग प्रधान डा. सूर्यकान्त

आर्य समाज बरनाला के नवनिर्वाचित प्रधान डा. सूर्यकान्त शोरी जी के साथ चित्र खिंचवाते हुये आर्य समाज बरनाला के सभासद एवं पदाधिकारी।

शोरी जी की अध्यक्षता में साधारण सभा की बैठक हुई जिसमें सर्वप्रथम कोषाध्यक्ष श्री सुखविन्द्र लाल मारकंडा जी ने साल 2018-19 के आय व्यय का विवरण प्रस्तुत किया। समस्त सदस्यों ने उसे एक स्वर में पारित कर दिया। तत्पश्चात मंत्री श्री तिलक राम ने वर्ष 2018-19 में कार्यकारिणी के सहयोग से किये गये वेद प्रचार सम्बन्धी कार्यों पर प्रकाश डाला। सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। इसके बाद चुनाव सम्बन्धी प्रक्रिया सम्पन्न करवाने के लिये मंत्री जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के मंत्री श्री भारत भूषण जी मेनन को मंच पर आमंत्रित किया। श्री मेनन जी ने अपने वक्तव्य में डा. सूर्यकान्त जी शोरी द्वारा गत वर्षों में अर्जित लोकप्रियता एवं कार्य कुशलता का जिक्र करते हुये बताया कि प्रधान डा. सूर्यकान्त शोरी जी की अगुवाई में फरवरी 2019 में आयोजित प्रान्तीय स्तर पर आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ और उसके बाद सदन से सर्वसम्मति से प्रधान चुनने के लिये कहा तो सभी उपस्थित सभासदों ने एक स्वर में प्रधान पद के लिये श्री डा. सूर्यकान्त शोरी जी का नाम प्रस्तुत किया। इसके अनुमोदन में सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। इस प्रकार डा. सूर्यकान्त शोरी जी को आर्य समाज बरनाला का प्रधान सर्वसम्मति से निर्वाचित कर दिया गया। इसके साथ ही कार्यकारिणी गठित करने का अधिकार भी दसवीं बार नवनिर्वाचित प्रधान डा. सूर्यकान्त शोरी जी को द्वारा दिया गया। अपने अधिकारों का प्रयोग करते हुये डा. शोरी जी ने कार्यकारिणी का गठन इस प्रकार किया। श्री हरमेल सिंह जोशी एवं श्री भारत भूषण मेनन उप प्रधान, तिलक राम मंत्री, सुखविन्द्र लाल मारकंडा कोषाध्यक्ष, रामचन्द्र आर्य पुस्तकालयाध्यक्ष, राम कुमार सोबती वेद प्रचार मंत्री, श्री केवल जिन्दल, श्री राजेश गांधी, श्री शिवकुमार बतरा, श्री सूरजभान गर्ग, श्री विजय आर्य, श्री चन्द्र वर्मा, श्री विनोद शोरी को अन्तरंग सदस्य के रूप में चुना गया। अंत में डा. सूर्यकान्त शोरी जी ने वेद प्रचार सम्बन्धी गतिविधियों को आगे ले जाने के लिये श्री मेनन जी एवं समस्त सभासदों को धन्यवाद किया। शांति पाठ के साथ सभा की कार्यवाही सम्पन्न हुई।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रवेश सूचना-II (2019-20)

निम्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र आमन्त्रित किये जाते हैं:-

पाठ्यक्रम	प्रवेश प्रक्रिया	आवेदन शुल्क*	अंतिम तिथि
पी-एच.डी.	[illegible]	₹1200/-	10-06-2019
बी.एस-सी./ बी.एस-सी. ऑनर्स [illegible]	प्रवेश परीक्षा के आधार पर	₹1000/-	10-06-2019
[illegible]	CAT/MAT/CMAT/GMAT/GRE के स्कोर के आधार पर	[illegible]	18-06-2019 [illegible]
बी.बी.ए.	[illegible]		
बी.ए./[illegible]/ एम.ए./पी.जी. डिप्लोमा	प्रवेश परीक्षा के आधार पर	₹1000/-	30-06-2019
बी.टैक.	JEE रैंक के AIR के आधार पर	₹300/-	वेबसाइट पर देखें
बी.टैक. द्वितीय वर्ष	प्रवेश परीक्षा के आधार पर	₹800/-	30-06-2019
[illegible]	प्रवेश परीक्षा के आधार पर	₹1000/-	25-05-2019

वेबसाइट: www.gkv.ac.in

कुलसचिव

@gkvsocial @gkvharidwar #gkv_hrd

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित।
सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org